शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2013

बौद्ध धर्म, सामाजिक गतिशीलता व अशोक

अजित कुमार भारती, शोधार्थी
इतिहास विभाग
जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, इंडिया

शोध संक्षेप

गंगा घाटी में छठी शताब्दी ई0 पू0 में जिन नए धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ उनमें सर्वाधिक सशक्त एवं चुनौतीपूर्ण धर्म बौद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म था। वैदिक धर्म के आडम्बरमयी स्वरूप को ध्वस्त करने में बौद्ध धर्म निश्चित रूप से सफल रहा। इसने भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय इतिहास और समाज को व्यापक रूप से प्रभावित किया। बौद्ध धर्म के प्रर्वत्तक गौतम बुद्ध थे लेकिन बौद्ध धर्म का वास्तविक प्रचार एवं प्रसार अशोक के द्वारा हुआ था। अशोक ने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर खुद को जिस प्रकार 'चण्डाशोक' से 'प्रियदर्शी' अशोक में परिवर्तित कर लिया वह बौद्ध धर्म की महत्ता एवं प्रभाव को प्रमाणित करने के लिए काफी था। प्रस्तुत शोध पत्र में अशोक एवं उसके द्वारा बौद्ध धर्म के लिए किये गए कार्यों पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना

बिन्दुसार की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र अशोक शासक बना। अशोक का शासनकाल भारतीय इतिहास का अत्यन्त गौरवशाली काल था क्योंकि उस समय में अशोक ने अपनी असाधारण क्षमताओं से भारत को सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रदान की। यही कारण है कि अशोक को न केवल भारत के वरन् विश्व के महानतम् शासकों में से एक माना जाता है। ए.जी. वेल्स ने लिखा है कि "इतिहास के पृष्ठों को रंगने वाले सहस्त्रों राजाओं के नामों के मध्य अशोक का नाम सर्वोपरि नक्षत्र के समान दैदीप्यमान है।"1 साम्राज्य विस्तार प्रशासनिक व्यवस्था, धर्म संरक्षण, हृदय की उदारता, कला के विकास एवं प्रजा-वत्सल्यता आदि प्रत्येक दृष्टिकोण से अशोक का स्थान सर्वोच्च है।

सम्राट अशोक और बौद्ध धर्म

प्रारंभ में अशोक ने मौर्य-साम्राज्य की परम्परागत नीति का ही अनुसरण किया। उसने मगध साम्राज्य का विस्तार किया एवं अखण्ड बनाए रखने का प्रयास किया तथा विदेशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये। अलग-अलग विद्वानों ने उसे वैष्णव, बौद्ध जैन मतावलम्बी माना है।2 लेकिन अंततः अशोक को किसी एक धर्म की परिधि में सीमित नहीं किया जा सकता है। जीवन के विभिन्न कालों में उनके धार्मिक विचारों में परिवर्तन आता गया। कलिंग विजय के पूर्व तक वे ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे। कलिंग युद्ध में भीषण हत्याकाण्ड के बाद उनकी अहिंसा में आस्था बढ़ गयी। जैन एवं बौद्ध धर्म ऐसे दो धर्म उस काल मे विद्यमान थे जो अहिंसा पर अधिकाधिक बल देते थे। जैन धर्म की कठोरता ने अशोक को आकर्षित नहीं किया और उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकारा। राज्याभिषेक के नवें वर्ष में वह उपगुप्त द्वारा बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए।

परन्तु यह मत परिवर्तन रातोंरात नहीं हुआ। अपने एक शिलालेख में उन्होंने कहा है कि, "ढाई वर्ष के पश्चात् ही बौद्ध मत का सच्चा अनुयायी बन सका था।"3 जब अशोक का धर्मिक दृष्टिकोण व्यापक हो गया तो सार्वभौम धर्म की ओर उनका झुकाव हो गया। अब वह किसी धर्म विशेष से बंधे हुए नहीं थे और एक नये धर्म के संस्थापक बन गए जो अशोक के 'धम्म' के नाम से प्रसिद्ध है। इस धम्म को बौद्ध धर्म की एक शाखा के रूप में स्थापित किया। अपने धम्म के द्वारा वे प्राणी मात्र का उद्धार करना चाहते थे। अशोक ने अपने साम्राज्य को अखण्ड बनाए रखने के लिए भी धम्म के प्रचार का सहयोग लिया। अशोक ने धम्म में अनेक कर्तव्यों का पालन करना बताया है। जैसे- प्राणवान जंतुओं को तप्त न करना, अस्तित्ववान जीवों को क्षति न पहुँचाना, माता-पिता की सेवा करना, वृक्षों की सेवा करना, गुरुओं का समादर, मित्रों, परिचितों, संबंधियों, ब्राह्मण एवं श्रमणों के प्रति उदारता एवं सम्यक व्यवहार, दासों एवं सेवकों से सम्यक व्यवहार, अल्प व्यय एवं अल्प संचय, धम्म मंगल, धम्म दान, धम्म विजय, सहिष्णुता एवं अहिंसा। धम्म का एक निषेधात्मक पहलू भी है जिसमें वह विभिन्न कार्यों को न करने का आवत्यन करता है जैसे - उग्रता, निष्ठुरता, क्रोध, घमण्ड, एवं ईर्ष्या। तीसरे स्तम्भ लेख में अशोक कहता है कि, "मनुष्य अपने सुकृतो को ही देखता है और सृकृतों को देखकर सोचता है कि यह उसने किया है, परन्तु वह कभी अपने आसिनवों पापों को नहीं देखता और न ही यह सोचता है कि यह पाप उसने किया है।"4 इस प्रकार धम्म का एक सिद्धान्त आत्म निरीक्षण भी है क्योंकि इसका पालन किये बिना मनुष्य अपने पापों (आसिनवों) को नहीं पहचान सकता तथा जब तक वह अपने पापों को नहीं जानेगा तब तक वह उससे मुक्त नहीं हो सकता।

अशोक ने धम्म के प्रचार के लिए अनेकानेक साधनों को अपनाया तथा परिणाम स्वरूप उसे बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार में अभूतपूर्व सफलता भी प्राप्त हुई। अशोक ने स्वयं अपने से अभिलेखों (लघु शिलालेख, प्रथम तथा चौथे शिलालेख) में इस सफलता का उल्लेख किया है। प्रथम लघु शिलालेख में अशोक ने लिखा है, "इस अवधि में सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में, मनुष्यों को, जो बिना मिले थे, देवों के साथ मिलाया। यह उद्योग का ही फल है। यह कार्य सिर्फ बड़े अधिकारियों के करने का नहीं है। अधीनस्थ अधिकारी भी अपार उद्योग करें तो प्रजा को अत्यन्त स्वर्गीय सुख प्राप्त करा सकता है।"5 अशोक ने धर्म लेखों को साम्राज्य के प्रमुख मार्गों, सीमावर्ती प्रवेशों में शिलाओं तथा पाषाण स्तम्भों पर खुदवाया। धर्म यात्राएँ कर अशोक ने न केवल धर्म प्रवचन किये वरन् उसने विद्वानों का सत्संग किया। धर्म यात्राओं में उसने तीन कार्य किये। पहला श्रमणों के दर्शन व उन्हें दान दिया, दूसरा स्थिवरों के दर्शन कर उन्हें दान दिया एवं तीसरा जनपदों के मनुष्यों के दर्शन कर उनसे धार्मिक चर्चा की। उसने ऐसे सामाजिक समारोहों का आयोजन किया, जिससे लोगों में धार्मिक कार्यों के प्रति आकर्षण हो। अशोक के चौथे शिलालेख में उल्लेख है कि उसने मनुष्यों को विमान दर्शन, हस्ति दर्शन और अग्नि स्कन्धा आदि दिव्य रूपों का दर्शन कराया। धम्म के प्रचार हेतु उसने धर्म सम्बन्धी वाद-विवाद तथा संगोष्ठियाँ आयोजित करायी। धर्म मंगल अर्थात् कल्याणकारी कार्य कराये। इसके लिए उसने मार्गों

पर वृक्ष लगवाये, जलाशयों, औषधालयों एवं धर्मशालाओं का निर्माण कराया। अशोक ने अपने राज्याभिषेक के चौदहवें साल में 'धम्म महामात्रों' की नियुक्तियाँ कीं जिनका मुख्य कार्य था जनता में धम्म का प्रचार तथा कल्याणकारी कार्य करना।6 उसने अपने अधिकारियों को आदेश दिया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों का दौरा करें और वहाँ प्रशासकीय कार्यों के साथ धर्मोपदेश करें।

अशोक ने अहिंसा का प्रचार धर्म के मूल मंत्र के रूप में किया। उसने पाकशाला में पशुवध को बंद कर दिया। धर्म प्रचार के लिए अशोक ने महात्मा बुद्ध की परम्परा को जारी रखा। अशोक ने उपने अभिलेखों व ग्रन्थों की रचना पाली भाषा में करायी। धर्म का सर्वत्र प्रचार हो इसके लिए उसने बौद्ध मठों, विहारों एवं स्तूपों का सम्पूर्ण भारत में निर्माण कराया। परम्पराओं के अनुसार उसने 84,000 स्तूपों का निर्माण कराया।7 इतना ही नहीं अशोक ने धर्म के प्रचार में बौद्ध धर्म में उत्पन्न होने वाले मतभेदों का निवारण करने के लिए पाटलिपुत्र में मोग्गलिपुततिस्स की अध्यक्षता में तृतीय बौद्ध संगीति (251ई0पू0) का आयोजन कराया।8 बौद्ध सिद्धान्तों का प्रामाणिक संकलन तैयार करना इस संगीति का मुख्य उद्देश्य था। इस संगीति में बौद्ध धर्म ग्रन्थों में संशोधन, मतभेदों का निवारण कर नये रूप में धर्म का प्रचार का कार्य आरम्भ हुआ।

निष्कर्ष

अनेकानेक अभिलेखों एवं साहित्यिक प्रमाणों से ज्ञात होता है कि अशोक ने अपने धर्म का प्रचार प्रसार न केवल भारत वरन् विदेशों में भी किया। बौद्ध ग्रन्थ महावंश और दीपवंश से ज्ञात होता है कि उसने तृतीय बौद्ध संगीति के पश्चात् विभिन्न देशों में धर्म प्रचारक भेजे। इनमें कश्मीर और गान्धर में मज्सन्तिक, महिष्म मंडल (मैसूर) में महादेव, यवन राज्य में महारक्षित, उपरान्त (पश्चिमी भारत) में धर्म रक्षित, हिमालय प्रदेश में मजिश्म, महाराष्ट्र में महाधर्मरक्षित, वनवासी में रक्षित, स्वर्ण भूमि (पेगू) में सोन और उत्तरा, लंका में महेन्द्र और संघमित्रा प्रमुख थे।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अशोक का 'धम्म' ने बौद्ध धर्म की एक शाखा के रूप में कार्य किया तथा इसके प्रचार के लिए अशोक ने अनेकानेक साधनों को अपनाया। यह उसके उचित एवं सतत् प्रयासों का ही परिणाम था कि उसके द्वारा प्रचारित धम्म (बौद्ध धर्म) अतिशीघ्र ही अन्तर्राश्ट्रीय रूप में विकसित हो गया तथा सामाजिक परिवर्तन का कारक बना।

सन्दर्भ

1. वेल्स, एच. जी. "द आउटलाइन आॅफ हिस्ट्री" पृष्ठ 266

2. सिंह, अमरेन्द्र कुमार, "भारतीय इतिहास की झलक" आलोक भारती प्रकाशन, पटना, 2009, पृष्ठ 37

3. थापर, रोमिला, "भारत का इतिहास", राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975, पृष्ठ 63

4. सिंह, अमरेन्द्र कुमार, "भारतीय इतिहास की झलक" आलोक भारती प्रकाशन, पटना, 2009, पृष्ठ 39

5. मितल, ए.के., "इतिहास" साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2010, पृष्ठ 183

6. सिंह, नरेन्द्र प्रताप, भारतीय इतिहास, किरन कम्पटीशन्स टाइम्स, इलाहाबाद, 2010, पृष्ठ 30

7. चतुर्वेदी, ए.के., इतिहास, उपकार प्रकाशन, आगरा, 2009, पृष्ठ 442

8. सिन्हा, अमित निरंजन, बिहार सामान्य ज्ञान, अरिहन्त पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2011, पृष्ठ 21